

Teacher - A.K. Sinha

Date _____ पृष्ठ 1
Page _____

Topic - Psychopathology of Everyday Life:
"Nature and Types".

सभी मानव पूर्ण नहीं हैं अतः प्रायः उन्हें छोटी-छोटी गलतियों का होना स्वभाविक है। परन्तु इनमें से कुछ गूले अज्ञानतावश या अन्यास हो जाते हैं। लेकिन कुछ गूले ऐसा भी होता है जिसका ज्ञान व्यक्ति को रहता है और उसका भविष्य में सुधार हो जाता है। परन्तु जो गलतियाँ अनजाने में होती हैं वे मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होती हैं। इसलिये Freud ने दैनिक जीवन की साधारण गूलों को महत्वपूर्ण बताया है। ये गूले अनेक प्रकार की होती हैं जैसे:- व्यक्ति, स्वार्थ के मामलों की गूलना, महत्वपूर्ण कार्यक्रम की गूलना, चीजों को उधार-उधार रख देना वगैरह गूल जाना, बोलने की गूले, लिखने की गूले, ध्यान की गूले आदि। Freud ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Psychopathology of everyday life" में इसका विस्तृत वर्णन किया है जिसमें इन गूलों को उन्होंने उद्देश्यपूर्ण, महत्वपूर्ण एवं लाभकारी बताया है। इनके अनुसार सप्रकार की गूले अकारण नहीं होती हैं। उनके अनुसार "Common mistakes of everyday life has a cause significance and economy." Freud अपने इस statement को काइ उदाहरणों का विश्लेषण का प्रमाणित भी किया है।

Freud के अनुसार, दैनिक जीवन की साधारण गूले अचेतन विषयों के प्रतिनिधि होती हैं। अचेतन में अतृप्त दमित इच्छा प्रकट संचित रहते हैं। ये इच्छा प्रकट असांजिद, अर्गोतिक, घृणित या अपास्तविक स्वरूप के होते हैं। अतः चेतन के प्रतिकर्षों के कारण इनकी अभिव्यक्ति नहीं होती है और अहं द्वारा इन्हें दमित कर दिया जाता है। लेकिन अचेतन में दमित ये इच्छा प्रकट निष्क्रिय नहीं रहते, अपितु निष्कासन के लिए सदा सक्रिय रहते हैं। इसी सक्रियता के कारण व्यक्तियों की ये इच्छाएं अचेतन से निकलकर उनके दैनिक जीवन की गूलों के रूप में अपना स्थापित करना लेते हैं।

Freud ने दैनिक जीवन की इन गूलों को मनोवैज्ञानिक इच्छाओं से बड़ा महत्वपूर्ण माना है। इनके अनुसार चूंकि इतने प्रकार की गूली-अचेतन कारणों से होती है और इन गूलों के कारण से व्यक्ति अपनी तृप्त अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति करता है, इसके लिए ये गूली अचेतन में दमित इच्छाओं का प्रतिनिधि बनती है। इन गूलों के विश्लेषण से मानसिक रोगियों के (Psycho-dynamics) मनोवैज्ञानिक के बारे में आसानी से समझा जा सकता है तथा रोगों के निदान, रोग के उपचार का पूर्वज्ञान एवं चिकित्सा करने में आधिकाधिक सहायता मिलता है।

Free में दैनिक जीवन की इन मूल्यों की लाभकारी वतामा है जिसे कही-2 या मित्रवर्गी (Economic) शब्द से भी संबोधित किया जाता है। इनका ऐसा मानने का वाक्य यह है कि- अचेतन में दमित 'इच्छा प्रवाह' चेतन रूप से प्रकट होने के लिए हमेशा सक्रिय रहता है। परंतु चेतन स्तर पर पराई (Super Ego) का कड़ा पहलू या प्रतिपक्ष रहने के कारण इनकी अभिव्यक्ति अधूरी रहती है। परिणाम स्वरूप इन इच्छा-प्रवाहों का सामान्य रूप-नियोजन नहीं हो पाता। जाकिं की यह स्थिति यदि बरतनी बनी रहती है तो वह पागल, उदासीन और खराब हो जाएगा। इस प्रकार जाकिं के अचेतन की दमित असूक्ष्म इच्छाओं का रूप (Indisguised Form) रूप दैनिक जीवन की साधारण मूल्यों द्वारा स्वतः प्रकट होती रहती है और इस प्रकार ये मूल्य इन इच्छा-प्रवाहों के नियोजन का माध्यम बनती हैं। इस प्रकार जाकिं पागल, उदासीन बना खराब होने से बच जाता है। अतः मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह लाभकारी प्रतीत होता है।

इस प्रकार उपरोक्त विवरणों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि इन दैनिक जीवन की मूल्यों में- अचेतन का अलग महत्त्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि इन मूल्यों के वास्तविक कारण अचेतन में विद्यमान रहते हैं तथा अचेतन की सक्रियता के कारण ये मूल्य अचेतन रूप से जाकिं के दैनिक जीवन की छोटी-छोटी गलतियों के रूप में प्रकट होती हैं।